समय का चक्र फिरता रहता
खेल रात दिन का चलता रहता
रुकता नही यह अनादि अविनाशी चक्र
हार जीत का है यह निराला खेल
इसमें होते कभी पास तो कभी फेल
भाग्य बनता जो इस को करे न व्यर्थ
होता जीवन उसका ही फिर समर्थ

समय कभी नही है रुकता
बीत गया जो पल फिर नही लौटता
हर पल नया नयी किस्मत जगाता
वर्तमान सफल तो भविष्य होगा सफल
बीती को बीती कर इस पल को सुंदर बनाओ
श्रेष्ठ भाग्य की कलम से चमकाओ

ॐ शांति।